रात्रि क्लास 14/1/69 ओम शान्ति शिवबाबा याद है?

रूहानी बाप रूहानी बच्चों को समझाते हैं। क्योंकि आत्मा ही समझती है। फिर कहती हो वा कहता हो। आत्मा के रूप में तो बच्चे मेल ठहरे। सभी भाई2 हैं। आत्मा को क्या कहें। इस हिसाब (से) सभी बाप के बच्चे हैं। फीमेल–मेल का शरीर यहाँ होता है; परन्तु जहाँ आत्माएँ रहती हैं वहाँ सभी ब्रदर्स हैं। आत्माएं ही आत्माएं हैं। बाप है परम आत्मा। सुप्रीम फादर। उनके सभी हैं बच्चे। फीमेल शरीर में हैं, नहीं तो सभी भाई2 हैं। घर में आत्माएं और परमात्मा है। पहले2 यह समझना चाहिए मैं आत्मा हूँ या परमात्मा हूँ। साधु–सन्त आदि कहते हैं परमात्मा सर्वव्यापी है। आत्मा के बदली परमात्मा सर्वव्यापी कह देते हैं। अभी राइट क्या है, रांग क्या है समझनी चाहिए ना। नई दुनिया राइटियस दुनिया है। पुरानी दुनिया है अनराइटियस दुनिया। सच्ची दुनिया में सुख है, जिसको पैराडाइज़ कहा जाता है। अनराइटियस दुनिया में है दुःख। बाप को राइटियस सच्चा कहा जाता है। रावण है ही असुर। 5विकार है ना। तो कहते हैं आसुरी भ्रष्टाचारी सम्प्रदाय। वह है दैवी सम्प्रदाय, श्रेष्ठाचारी सम्प्रदाय। सतयुग, त्रेता को स्वर्ग कहा जाता है। सुख उनमें है। द्वापर, कलियुग में है दुःख। कलियुग और सतयुग का संगम है यह। बाप आते हैं संगम पर अनराइटियस को राइटियस बनाने। सतयुग है वायसलेस वर्ल्ड। कलियुग है विषियस वर्ल्ड अर्थात् जो पवित्र दुनिया है उनमें सुख है। अपवित्र दुनिया में दुःख है। जो कुछ बोलते हैं सभी गाली ही देते हैं। आत्मा शरीर द्वारा बोलती है। तो परमपिता परमात्मा को भी शरीर चाहिए ना। अभी तुम समझाते हो आत्माओं को परमात्मा पढ़ाते हैं। बाप बिगर सृष्टि के आदि–मध्य–अन्त का राज़ कोई समझा नहीं सकते। इसलिये न जानने के कारण हम नास्तिक बन जाते हैं। निर्धन के बन जाते हैं। अभी हम बाप को जानकर धनी के बने हैं। एकज भूल से हम आत्माएँ कल्प2 नीचे ही गिरते आये हैं। अभी बाप कहते हैं तुम मुझ बेहद के बाप को भूल गये हो। कहते भी हो परमपिता। वह तो स्वर्ग का वर्सा देते हैं। मनुष्य फिर कह देते परमात्मा सर्वव्यापी है। बाप अभी सत्य बताते हैं। आगे ऋषि–मुनि भी नेती2 कहते थे अर्थात् हम नहीं जानते हैं। अभी बाप खुद समझाते हैं तो तुम कहते हो हम सभी कुछ जान गये। नॉलेजफुल फादर से ही नॉलेज मिली है। तुम जानते हो 5000वर्ष पहले इनका ही राज्य था। बाप जो पढ़ाते हैं वह राइट ही है। फिर झूठ खण्ड भी होना है। अभी कलियुग है। कितने ढेर मनुष्य हैं। सतयुगी ल0ना0 है नहीं। अभी भारत से है हिन्दू–राज्य। देवी–देवताएं हैं नहीं। फिर द्वापर से पतित बने हैं। इसलिये देवता नहीं कहा जाता। बाकी हिन्दु कोई धर्म नहीं। न इनका हिन्दुस्तान नाम था। नाम तो भारत ही था। देवी–देवताएं रहते थे। बाप भी कहते हैं यदा यदा ही..... ऐसे थोड़े ही कहते हैं रभवती हिन्दुस्तान। असल देवी–देवताएं रहते हैं जब पतित बने हैं तो नाम बदला है। अभी सभी हैं पतित। तब बुलाते हैं बाबा आकर पतित से पावन बनाओ अथवा मनुष्य से देवता बनाओ। बाप ही मनुष्य को देवता बनाते हैं। अभी भगवान सिखला रहे हैं। भगवान कोई कृष्ण नहीं। शिव को कहा जाता है। वह सदैव निराकार ही है। कृष्ण को कोई सदैव निराकार नहीं कह सकते। शिव का नाम कब बदलता नहीं है। शिवबाबा कहेंगे हमने इनका आधार लिया है। तुम बच्चे राजऋषि हो। पवित्र बन रहे हो। पवित्र बन फिर अपवित्र भी बन पड़ते हैं; क्योंकि लड़ाई है ना। बड़ी समर्थ है माया। आ(धा) कल्प तुम रावण के राज्य में, आधा कल्प रामराज्य में रहते हो। माया रावण सभी को पतित बना देती है ड्रामा के प्लैन अनुसार। इस समय सभी हैं विकारी। माया का भभका देखो कितना है। मनुष्य समझते हैं यह स्वर्ग ..... यह साइंस का भभका है। इनको स्वर्ग नहीं कहेंगे। स्वर्ग में बीमारी आदि होती ही नहीं। अकाले मृत्यु होती .... नहीं। मोह जीत रहते हैं। स्वर्ग में कोई रोते ही नहीं। सतयुग में ऐसा कब होता नहीं; क्योंकि रावण राज्य .... नहीं। वह है अमरलोक। अमरलोक के आधा कल्प बाद मृत्युलोक आता है। यह चक्र फिरता रहता है। इनको ..... चाहिए ना। जो नहीं जानते हैं गोया नास्तिक हैं। यह दुनिया ही झगड़ों की है। बेहद के बाप को जानते (ही) नहीं। गोया निर्धण के हैं। इसलिए लड़ते–झगड़ते हैं। अभी तुम आस्तिक बनते हो। बाप को जान बाप से 21 ..... रहते हो। आयु भी बड़ी रहती है। शिवालाय उसको कहा जाता है

शिवबाबा ने स्थापन किया है। किस द्वारा? ब्रह्मा द्वारा। त्रिमूर्ति है; परंतु ऊपर में बाप है नहीं। ब्रह्मा देवताय नमः, विष्णु देवताय नमः, शंकर देवताय नमः गाते हैं। फिर कहेंगे शिव परमात्माय नमः। .... ऊँचा हुआ ना। वह है सुप्रीम आत्मा। इसलिए उनकी महिमा अलग है। शिवबाबा का कोई बाप नहीं। उनका कोई टीचर नहीं। उनका कोई गुरु होता नहीं। उनकी महिमा गाते हैं त्मेव माताश्चपिता..... बाप 21जन्म का वर्सा देते हैं। चिरंजीवी अर्थात् सदा जीते रहो, सदा अमर रहो। सो तुम स्वर्ग में सदैव जीत रहते हो। को काल खाता नहीं। जब 150वर्ष का शरीर होता है तो साक्षात्कार होता है तुम बच्चा बनेंगे। मरने समय भी साक्षात्कार होंगे। रोने आदि की बात ही नहीं। वह है ही अमरलोक। मृत्यु का नाम ही नहीं। रावण राज्य को कहा जाता है मृत्युलोक। सतयुग में काल आ नहीं सकता। भगवान जरूर सत्य ही पढ़ावेंगे। जो कहेंगे सो सत्य। इसमें संशय नहीं। ऊँच ते ऊँच बाप सत्य ही सुनाते हैं। उनके आधार पर ही हम सुनाते हैं। कलियुग में झूठी माया..... सतयुग में है सतोगुणी। बेहद का बाप स्वर्ग का ही वर्सा देंगे। स्वर्ग में है ही देवी–देवताएँ। वहां शराब आदि किचड़ा कुछ भी होता ही नहीं। कोई समझदार बच्चे आपे ही छोड़ देते हैं। कोई को टाइम लगता है। कहते हैं सिगरेट बिगर पेट में दर्द..... यह सभी है बहाना। आदत पड़ी है उनको छोड़ना है, नहीं तो पद कम हो जावेगा। कितना घाटा डाल देते हैं सिगरेट। पवित्र ज़रूर बनना है। पवित्र बनाने वाला एक ही बाप है। पावन दुनिया थी ना। सतयुग को पावन दुनिया, कलियुग को पतित दुनिया कहा जाता है। भारत इस समय वेश्यालय है। विख पीने वाले हैं। बाप कहते हैं मैं तुमको अमरलोक में ले जाने अमृत पिलाता हूँ, फिर तुम विख क्यों खाते हो? विख को याद क्यों करते हो? ऊँच पद पाना है तो मेहनत करो। पुरुषार्थ पर ही मदार है। भगवान सत्य ही सुनाते हैं इसमें संशय नहीं हो सकता। बाप ने आकर बच्चों को दिव्य दृष्टि दी और यह चित्र बनवाई है। छोटे बच्चों चित्र पर समझाया जात है ना। फिर जब बड़े होते हैं तो नक्शा आदि पर समझाया जाता है। अभी तुम पढ़ते हो। मनुष्य नहीं जानते हैं स्वर्ग की स्थापना कैसे ..... करते हैं। श्री कृष्ण पूरे 84 जन्म लेते हैं तो नम्बरवन भी होंगे। यह है गीता। बहुत जन्मों के अंत के जन्म के भी अंत में 84 जन्म हैं। 5000वर्ष लगे हैं। किसके आधार पर कहते हो? परमपिता परमात्मा के आधार पर। जो सद्गति दाता है। मनुष्य को देवता बनाते हैं। अच्छा, बच्चों को गुडनाइट।